# LOK SABHA

*Wednesday, March 7, 1979/ Phalguna 16, 1900 (Saka)*

*The Lok Sabha met at Eleven of the Clock.*

[MR. SPEAKER in the Chair]

## ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

### सीमेंट उद्योग में मिट्टी के तेल का उपयोग

*233. श्री अचल सिंह ठाकुर :
श्री सुभाष आहूजा :

क्या उद्योग मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) क्या सीमेंट उद्योग में कोयले के स्थान पर भट्टी के तेल का उपयोग किया जा रहा है; और

(ख) यदि हां, तो इसके कारण सीमेंट के उत्पादन पर किस प्रकार प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की सम्भावना है?

उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री जगदम्बी प्रसाद यादव)) (क) सीमेंट का उत्पादन करने वाले 9 एककों को जिन्हें तेल से चलने वाले अतिरिक्त उपकरण प्राप्त हो गए हैं, सीमेंट उत्पादन के लिए कोयले के कम संभरण के कारण कोयले की जगह अंशत: फरनेश आयात के प्रयोग की अनुमति दे दी गई है ।

(ख) ये 9 एकक फरनेस आयल का प्रयोग करके अधिकतम प्रति मास 3,37,447 मी. टन का उत्पादन करने में सक्षम हैं ।

श्री अचल सिंह ठाकुर: अध्यक्ष महोदय, भट्टी है तो भट्टी के तेल की कीमत बढ़ गई है, इस लिए सीमेंट उत्पादन के तेल से सीमेन्ट का उत्पादन होता में खर्चा बढ़ गया है और सीमेन्ट की कीमत दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है तथा बाजार में सामान्य जनता इसे खरीदने से वंचित है । मैं मंत्री महोदय से जानना चाहता हूं कि सीमेन्ट उत्पादन के लिये कोयले के प्रयोग के स्थान पर भट्टी तेल के प्रयोग से सीमेन्ट की उत्पादन लागत में क्या कोई वृद्धि होती है ? यदि हां, तो कितनी ?

उपभोक्ताओं को इस वृद्धि से बचाने के लिए सरकार का विचार क्या कार्यवाही करने का है ?

क्या भट्टी तेल के उपयोग से सीमेंट की क्वालिटी में भी कोई अन्तर आता है ?

कोयले की तुलना में भट्टी तेल के उपयोग से कोयले और तेल की उपलब्धता पर क्या प्रभाव पड़ता है ?





श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : श्रीमन्, कोयले की कमी के कारण ही फर्नेस आयल का उपयोग करने की अनुमति दी गई है । आपको पता होगा, पहले जब कोयले की प्राप्ति कई कारणों से नही हो रही थी और सीमेन्ट की आवश्यकता थी तो उस आवश्यकता को महसूस करते हुए फर्नेस आयल के उपयोग की अनुमति दी गई थी । फर्नेस आयल में जहां सीमेंट की उपलब्धि प्राइस मिल कर 130 रुपए तक हो जाती है वहां फर्नेस आयल की 1170 पड़ती है लेकिन जहां कोयला एक टन लगता है वहां फर्नेस आयल उसका आधा लगता है । फर्नेस आयल से कोयले के खर्चे के मुकाबले में सीमेन्ट का जो दाम बढ़ता है वह दुगुना होता है लेकिन मान दि होल ज्यादा नहीं बढ़ता है । आन दि होल 18 रुपए 53 पैसे प्रति टन दाम बढ़ाने की अनुमति दी गई है । इसलिए यह ज्यादा नहीं बढ़ा है लेकिन आवश्यकता को देखते हुए इसकी जरूरत थी ।

जहां तक काम की एफिसिएंसी का सवाल है, कोयले से फर्नेस आयल का काम ज्यादा अच्छा होता है परन्तु सीमेन्ट की क्वालिटी में कोई अन्तर नही पड़ता है ।

श्री अचल सिंह ठाकुर क्या मन्त्री जी बतायेंगे कि बाजार में सीमेन्ट की कीमत क्या है और कोयले की कमी के क्या कारण हैं ?

श्री जगदम्बी प्रसाद यादव : बाजार में सीमेन्ट की कीमत 20 रुपया प्रति बोरी है । इस सम्बन्ध में मैं एक बात यह भी बताना चाहूंगा कि जो मकान परमिट पर बनाते हैं उनको कन्ट्रोल रेट पर सीमेन्ट मिलता है लेकिन जो गलत ढंग से मकान बनते हैं और इस प्रकार से जो गलत ढंग से आवश्यकता बढ़ती है उसका बाजार भाव मैं नहीं बता सकता हूं, हो सकता है उसका दाम बढ़ जाता हो ।

कोयले की कमी की जहां तक बात है---नार्थ इंडिया में वर्षा, बाढ़ के कारण बहुत सी माइन्स में पानी चला गया था तथा वैगनों की कमी थी लेकिन अब यह झंझट दूर हो गया है और अब कोयले की सप्लाई 70 परसेंट तक पहुंच गई है । जहां पर 700 वैगन की आवश्यकता थी वहां पर 500 वैगन की आपूर्ति की जा रही है ।

श्री अनन्त दवे : मैं मंत्री महोदय से यह जानना चाहता हूं कि सीमेन्ट इण्डस्ट्री में कोल की जगह पर फर्नेस आयल यूज किया जाता है---मैं यह सुझाव देना चाहता हूं कि कोल की जगह लिगनाइट को भी यूज

कहा जा सकता है । गुजरात के कच्छ डिस्ट्रिक्ट में, बड़ी मात्रा में लिगनाइट मिला है । क्या सरकार इस पर विचार करेगी कि कोल की जगह लिगनाइट यूज किया जाये ?

श्री जगजीवन प्रसाद यादव : यह तो विचार करने के बाद की ही बतलाया जा सकता है कि लिगनाइट यूज कर सकते हैं या नहीं ।

श्री अमन्त बेंच : क्या आप इस पर विचार करेंगे ?

श्री जगजीवन प्रसाद यादव : इस के बारे में तो विचार करने के बाद ही पता लग सकता है ।

SHRI DWARIKADAS PATEL. May I know from the hon. Minister whether in our country, many industries are suffering due to want of supply or shortage of coal? When Members ask questions the Energy Minister says that there was sufficient amount of coal.

MR. SPEAKER: He will not be able to answer about coal.

SHRI DWARIKADAS PATEL: I am coming to industry. There was sufficient amount of coal with them. But they do not get sufficient wagons and when they ask the Railway Minister for the supply of wagons, they are told that the railways have got sufficient number of wagons but for the short supply of coal, they have cancelled many goods trains and, as a result, the industries are suffering.

I would also like to know from the hon. Minister categorically as to what is the real position regarding the coal supply and, further, whether the Energy Minister is correct or the Railway Minister is correct.

MR. SPEAKER: I am sorry he will not be able to answer any one of your questions.

SHRI DWARIKADAS PATEL: The policy of the Janata Government is to shirk its responsibility.

MR. SPEAKER: He will not be able to answer.

**U.S.S.R. offer of Heavy Water**

*225. SHRI PIUS TIRKEY:
DR. BIJOY MONDAL:

Will the Minister of ATOMIC ENERGY be pleased to state:

(a) whether it is a fact that USSR has recently offered to supply 200 tonnes of Heavy Water for Rajasthan Atomic Power Project;

(b) if so, the terms and conditions on which the offer has been made; and

(c) whether Government have rejected the offer and if so, the reasons thereof?

THE PRIME MINISTER (SHRI MORARJI DESAI): (a) No, Sir.

(b) and (c) Do not arise.

SHRI PIUS TIRKEY. Will the hon. Prime Minister be pleased to state whether it is correct that the supply of heavy water for Rajasthan Atomic Power Project is not forthcoming because U.S.A. demands the right of supervision? What are the alternative sources from which India plans to obtain heavy water if U.S.A. persists in its demand for inspection?

SHRI MORARJI DESAI: As I said, there is no proposal now of getting it. But, there was, in 1976, an agreement with Russia where they had agreed to supply 200 tonnes of heavy water. There, the safeguard has been accepted. The safeguard is that anything produced out of this should not be used for nuclear weapons or for any explosive devices. The safeguard is only for that purpose. And that was accepted in 1976.

SHRI PIUS TIRKEY: My second question is: will the hon. Prime Minister be pleased to state whether there is any government plan to discuss the matter with Shri Kosygin in his forthcoming visit to India?